© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

प्राचीन भारत में गणराज्य

डॉ दानपाल सिंह
0177A काजीपुरखुर्द,
गोरखपुर, उप्र।

यदि हम 'गण' के शाब्दिक अर्थ पर विचार करें तो इसका वास्तविक अर्थ है समूह। इस प्रकार गण से आशय 'लोगों के समूह' से है। इस प्रचीनतम उल्लेख ऋग्वेद में प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त अन्य वैदिक ग्रन्थों में भी इसका उल्लेख बहुलता से मिलता है। गण का उल्लेख ऋग्वेद में छियालीस बार, अथर्ववेद में नौ बार और ब्राह्मण ग्रन्थों में अनेक बार हुआ है। इस विविध वैदिक सन्दर्भों में इस शब्द का भाव किसी समूह, सभा तथा सेना से है।[1]

'गण' शब्द की व्युत्पत्ति 'गण' धातु से हुयी है, जिसका अर्थ है गिनना शाब्दिक रूप से गण का अर्थ जनजाति नहीं है अपितु यह बल्कि कुछ लोगों के शिथिल समूह का सूचक है तथापि ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक साहित्य में अनेक स्थलों पर यह जनजातीय संगठन के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। वैदिक साहित्य में देवताओं के गणों के अनेक उल्लेख है।[2] पौरणिक और महाकाव्य साहित्य में, जिसमें हमारा प्राचीनतम आनुश्रुतिक इतिहास वर्णित है, देवों और असुरों के गणों के पुष्कल उल्लेख है। ये और कुछ नहीं बल्कि मानव समाज से विद्यमान गण संगठन के प्रारम्भिक प्रतिबिम्ब है।

पूर्व तथा उत्तर वैदिक साहितय में गण के उल्लेखों के अध्ययन से प्रकट होता है कि यह मुख्य रूप से भारतीय आयों का एक प्रकार का जातीय संगठन था।[3] मरुत का वर्णन रूद्र के उनचास पुत्रों[4] या नौ–नौ के समूहों में विभक्त तिरसठ पुत्रों[5] के रूप में हुआ है। इस वर्णन से वैदिक गणों का जनजातीय स्वरूप हो जाता है पौराणिक तथा महाकाव्य साहित्य में वर्णित अनेक गण मातृनाम (मेट्रानिमिक्स) धारण करने वाले है। दृष्टांतस्वरूप, आदित्यों का गण अदिति से निकला था।[6] महाभारत में स्कंद कार्तिकेय के वर्णन में बताया गया है कि वह सात मातृगणों के साथ दैत्यों के विरूद्ध लड़ने लगा।[7] एक दूसरे स्थान पर, जहाँ माताओं की प्रशस्ति अंकित है, हमे कई गणों में विभक्त एक सौ से अधिक माताओं के नाम मिलते है।[8]

वैदिकगण सभा के रूप में भी कार्य करता था। गिफिथ ने ऋग्वेद के अनुवाद में अनेक स्थलों पर इसे देवताओं या मनुष्यों की सभा कहा है। ऋक् और अथर्ववैदिक संहिताओं में मरुतों के बलशाली और ओजस्वीगणो की चर्चा बार–बार सेना के अर्थ में हुयी है।[9] इस सेना का नेतृत्व करते हुए कभी–कभी सूर्य या इंद्र को भी दिखाया गया है।[10] आदिम और प्रारम्भिक काल के लोगों के जातीय संगठन के सादृश्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गण अपनी इच्छानुसार काम करने वाला सशस्त्र संगठन था जिसका प्रत्येक सदस्य शस्त्र धारण करता था। वैदिकगण धार्मिक सभा का भी काम करता था। वैदिकगण की विशिष्टता थी कि इसमें वर्गभेद नहीं था। मरुत जो कि गण समाज के विशेष दृष्टांत है, विशः या जन के रूप में वर्णित है।

जहाँ तक भारत में गणतंत्रात्मक राज्य की प्राचीनता का सम्बन्ध है, इस बात को मानने के लिए कुछ आधार उपलब्ध है कि वैदिक काल में भी वह अज्ञात नहीं था। ऋग्वेद की अधोनिर्दिष्ट ऋचा में जिमर को अल्प जनतंत्र का स्पष्ट चिन्ह दिखायी देता है।[11]

''जिस प्रकार राजा लोग (राजानः) समितियों में एकत्र होते हैं, उसी प्रकार औषधियां उसमें एकत्र होती है, जो भिषज् कहलाता है जो व्याथि को दूर करता है और राक्षस की नष्ट करता है।''

जिमर का विचार है कि इस ऋचा में शासन की उस पद्धति का उल्लेख है, जिसमें राज्य पर एक राजा शासन नहीं करता, अपितु राज परिवार के अनेक सदस्य संयुक्त रूप से राज्य करते है। उनका विश्वास है कि राजाओं के निर्वाचन से सम्बद्ध अथर्ववेद के मंत्रों में से कुछ वस्तुतः अल्प जनतंत्र के सभी सदस्यों पर एक सदस्य के होने वाली स्पर्था की ओर संकेत करते है। अपनी धारणा के समर्थन में वे अथर्ववेद के निम्ननिर्दिष्ट मंत्रों का उल्लेख करते है–

(1) अथर्ववेद 1,9,3 जिसमें सर्वोच्चता के प्रत्याशी को उसके साथियों (सजात) के ऊपर प्रतिष्ठित करने के लिए इन्द्र से प्रार्थना की गयी हैं।
(2) अथर्ववेद 3,4,3 जहाँ सफल प्रत्याशी के प्रति यह शुभ कामना व्यक्त की गयी है कि, तेरे साथी तेरे पास आयें।
(3) अथर्ववेद 4, 22, 1–2, जिसमें इन्द्र से कहा गया है कि वह ''क्षत्रियों को प्रजा का एकाथिपति'' बनाये और उसे ''राजा के रूप में राजकुल (श्रत्राणाम्) के ऊपर प्रतिष्ठित करें।[12]

श्री काशी प्रसाद जायसवाल ने वैदिक काल में शासन के गणतंत्रात्मक रूप के अस्तित्व के पक्ष में एक और प्रमाण प्रस्तुत किया है।[13] वे ऐतरेय ब्राह्मण के एकवचन (7,3,14) का उल्लेख करते है जिसमें कहा गया है कि उत्तरकुरुओं और उत्तरमदों में शासन के लिए समस्त समुदाय का अभिषेक किया जाता था तथा उनकी संस्थाएं ''वैराज्य अथवा गणतंत्राात्मक राज्य'' कहलाती थी।

''वैराज्य'' शब्द जिसे जायसवाल ने गणतन्त्रात्मक राज्य के अर्थ में लिया है, मैक्डानल और कीथ के अनुसार एक प्रकार की राजशक्ति का वाचक है।[14]

अथर्ववेद में सन्दर्भ (5,18,10) है जो वैदिक काल में गणतन्त्रात्मक शासन का निश्चित प्रमाण प्रतीत होता है। यह मन्त्र ब्राह्मण की गाय की हत्या के कारण दिये गये शापों की एक लम्बी लड़ी के मध्य में प्राप्त होता है। यह इस प्रकार है–

''ये सहस्रं अराजन्नासन् दश शताउत।
ते ब्राह्मणस्य गां जग्धा वैतहव्या पराभवन्।।''
व्हिटने इस मन्त्र का अनुवाद इस प्रकार करते हैं–

''वे वैतहव्य, जो एक सहस्र लोगों पर राज्य करते थे और दस सौ थे, ब्राह्मण की गाय को खाकर–नष्ट हो गये है।''[15]

जिमर, म्यूर तथा अन्य विद्वान इसका अनुवाद कुछ भिन्न प्रकार से करते हैं। ''वीतहव्य के वंशज, जो एक हजार लोगों पर राज्य करते थे और संख्या में दस सौ थे, ब्राह्मण की गाय को खाने के बाद पराभूत हो गये।''(म्यूर, संस्कृत टेक्स्ट्स जिल्द 1 पृ0 285)

चाहे जो भी भेद क्यों न हो यह मूलभूत सत्य है कि वैतहव्य जो संख्या में 1000 थे, एक प्रदेश पर राज्य करते थे, और इसमें सन्देह नहीं कि यह अल्प–जनतन्त्रात्मक अथवा गणतन्त्रात्मक[16] जन का एक उदाहरण है।

पाणिनि की अघ्टाध्यायी में उल्लिखित वेदोत्तर काल में शासन के लोकसत्तात्मक रूपों का अस्तित्व अनेक प्रमाणों से भली–भाँति सिद्ध होता है। काल दृष्टि से पाणिनि का व्याकरण ग्रन्थ प्राचीनतम् है जिसमें राजनीतिक संघों के स्पष्ट चिन्ह मिलते है। इसमें सन्दर्भित–**''सङ्ध चानौत्तरार्ध्ये''**[17] सूत्र से स्पष्ट होता है कि पाणिनि के समय में संघ का स्परूप अच्छी तरह ज्ञात था, क्योंकि यहाँ संघ और साधारण भीड़ या समुदाय के मध्य स्पष्ट विभेद दिखाया गया है, जिससे यह सूचित होता है कि संघ कानून तथा नियमों से बंधा एक निश्चित संगठन था।

अघ्टाध्यायी के एक अन्य सूत्र[18] से भी यही निष्कर्ष निकलता है। वैय्याकरण इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि संघात शब्द की भांति संघ शब्द–केवल एक समूह का वाचक न होकर गण अर्थात् एक विशिष्ट प्रकार के समूह अथवा **'सङ्घ सृष्टि समूह'** का वाचक है।

श्री के0पी0 जायसवाल ने हमारा ध्यान पणिनि के एक अन्य सूत्र की ओर आकृष्ट किया है। यह सूत्र इस प्रकार है–

''सङ्घाङ्कलक्षणेष्वञयजिनामण।''

इसका अर्थ यह है कि ''सङधों के अंगकों और लक्षणों के सम्बन्ध में (अर्थात उन्हे व्यक्त करने के लिए) अञन्त और यञन्त संज्ञाओं से अण प्रत्यय होता है।[19]

यह केवल संघ के अस्तित्व को प्रामणित ही नहीं करता वरन् यह भी स्पष्ट करता है कि प्रत्यके संघ का अपना अंगक अथवा लक्षण होता था, जिसकी पहचान जायसवाल आगे चलकर उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य में वर्णित लांछन से करते है।[20] पाणिनि ने संघ और गण को पर्यायवाची माना है तथा संघ के अन्तर्गत अष्टाध्यायी में जैसे यौधेय[21], भद्र[22], वृजि[23] आदि जिन राज्यों का उल्लेख किया गया है वे सब गणतन्त्रात्मक अथवा प्रजातन्त्रात्मक राज्य ही है।

पाणिनि द्वारा उल्लिखित संघ और गण को कतिपय विद्धानों ने एक निश्चित आशय हेतु व्यक्तियों की संगठित संस्था से लिया है।[24] आर0सी0 मजूमदार ने इन्हें नियमों और कानूनों द्वारा बंधी निश्चित संस्था के अर्थ में लिया है।[25] परन्तु काशी प्रसाद जायसवाल ने पाणिनि तथा पालि कृतियों के सन्दर्भों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि मूलतः संघ और गण का प्रयोग गणतंत्रात्मक राज्यों के लिए हुआ था और धार्मिक संघों के लिए इनका प्रयोग बाद में हुआ।[26]

बौद्ध साहित्य विशेषकर जातकों में 'गण' का अर्थ एक ऐसी संस्था या समिति से है, जिसमें सदस्यगण मिलकर एक हो जाते थे। इसका दूसरा अर्थ गणराज्य भी है। बौद्धकाल में 'गण' शब्द का प्रयोग स्पष्ट रूप से

जनतन्त्रात्मक राज्यों के लिए होने लगा था। इस बात के सबल अन्तःसाक्ष्य है कि बुद्ध के आतिर्भाव–काल में अनेक स्वतत्र कबीले विद्यमान थे, जो अपना प्रशासन या तो प्रजातान्त्रिक या कुलीन तंत्रीय व्यवस्था के अन्तर्गत चलाते थे।[27] रीज डेविड्स ने बुद्धिस्ट इंडिया में गणतन्त्रात्मक पद्धति से प्रशसित इसी कोटि के राज्यों की ओर संकेत किया है।[28]

के0पी0 जायसवाल ने जैन ग्रन्थ आचारांगसूत्र के आधार पर गण के अस्तित्व का उल्लेख किया है। ''गण'' का अर्थ है– संख्या। अतः गणराज्य का अर्थ हुआ–''संख्या का शासन''। पाणिनि ने 'सेघों द्रधौगण प्रशंसयोः' में संघ को गण के अर्थ में लिया है। उनके काल में ''संघ'' से ''गण'' का बोध होता था, किन्तु उस समय तक धार्मिक संघ ने महत्व धारण नहीं किया था। मज्झिम निकाय में ''संघ'' और ''गण'' साथ–साथ प्रयुक्त हुए हैं।[29] जायसवाल का कथन है कि कुछ विदेशी विद्वानों–'मोनियर विलियम', 'फ्लीट', 'ब्हूलर' आदि ने गण का अनुवाद ''जन'' के अर्थ में किया है, जो गलत है। किन्तु टामस ने इसका वही अर्थ माना है जो जायसवाल ने किया है।[30] अल्तेकर का कथन है कि गण का अर्थ एक विशिश्ट राज्य व्यवस्था से है जो नृपतन्त्र से नितान्त भिन्न है।[31] उन्होंने अवदान शतक के एक संदर्भ की ओर संकेत किया है जिससे राज्यों के साथ–साथ गणतंत्रात्मक राज्यों का अस्तित्व अत्यन्त निर्णायक रूप से सिद्ध हो जाता है। अवदान संख्या 88 में कहा गया है कि मध्य देश–के कुछ व्यापारियों ने दक्षिण की यात्रा की तथा उनके देश में प्रचलित शासन के स्वरूप के सम्बन्ध में पूछे जाने पर उन्होंने उत्तर दिया–'कुछ राज्य राजाओं के अधीन है और कुछ गणों के।'[32] एक प्राचीनतम् जैन ग्रन्थ आचारांगसूत्र. भी गणराय (गण क्षरा शासित प्रदेश) का उल्लेख करता है।[33]

मज्झिम निकाय में प्रजातंत्रात्मक राज्यों के लिए संघ और गण शब्द साथ–साथ प्रयुक्त किये गये है। त्रिपिटक से ज्ञात होता है कि वर्तमान उत्तर प्रदेश के गोरखपुर और उत्तरी बिहार के प्रदेशों में अनेक गणतंत्र विद्यमान थे और इसमें तो लेशमात्र भी सन्देह नहीं कि बुद्ध के काल में मल्ल, लिच्छवि, विदेह आदि राज्य गणतंत्र थे। अनके पड़ेसी मगध और कोशल के राजा उन्हें बार–बार जीतने का प्रयत्न करते थे, इसलिए अपनी रक्षा के लिए ये गणतत्र अपना एक संयुक्त राज्य (संघ) बीच–बीच में बनाते थे।

अतः उपर्युक्त तथ्यों के अवलोकन से यह बात स्पष्ट है कि गण का अर्थ समूह से है। अतएव गणराज्य का अर्थ है– समूह संचालित राज्य प्रणाली। राजतंत्रेतर शासन पद्धति के बीज अतीत की संस्थाओं में छिपे थे। समय बीतने पर वे न केवल पल्लवित हुए वरन् कुछ स्थानों पर सुदृढ़ बन गये।[34]

बुद्धकालीन गणराज्यों के अस्तित्व के प्रति संकेत करने वाले प्रथम विद्वान रीज डेविड्स हैं। उन्होंने बौद्ध साहित्य में विकीर्ण सूचनाओं का संकलन कर उस युग में विद्यमान अनेक 'गणतंत्रात्मक राज्यों पर प्रकाश डाला है।[35] तदुपरान्त काशीप्रसाद जायसवाल ने माडर्न रिव्यू[36] में तथा देवदत्त रामकृष्ण भण्डारकर ने अपने कार्माइकेल व्याख्यानों[37] में इस विषय का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया। यद्यपि इन विद्वानों की समस्त स्थापनाओं से सहमत होना कठिन है, तथापि भारत में गणराज्यों के अस्तित्व के सम्बन्ध में इनके द्वारा प्रस्तुत प्रमाणों को अब साधारणतः स्वीकार कर लिया गया है।

संदर्भ सूची

1– युवा स मारूतो गणस्त्वेषरथो अनेद्यः, शुभं यावाप्रतिष्कुतः। ऋग्वेद, V 61.13.

2– गणदेवानाम् ऋभवः सुहस्ताः।ऋग्वेद, IV,35.3, तै0ब्रा0, II,8.6.4, श0ब्रा0,XIII 2.8.4

3– शर्मा आर.एस. प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचार एवं संस्थाएं पृ0 114

4– एकोन्पंचाशन्मरूतो विभवता अपि गणरूपेणेव वर्तन्ते। ताण्ड्य महाब्राह्मण, XIX.14.

5– श0ब्रा0, II, 5-1-12 ऋग्वेद, VIII, 96-9- ते0 ब्रा0, I,6.2.3.

6– आदिपर्व, 60.36–39

7– सप्त मातृगणाश्चैव समाजग्मुर्विशांपते.....।

8– शल्य पर्व (कुंबकोनम संस्करण), 45.29, 47.33–34

9– युवा सा मारूतो गणस्त्वेषरथो अनेद्यः, शुभं यावाप्रतिष्कुतः। ऋग्वेद, V, 61.13 अथर्व0, XIII,4.8 याम् आभजो मरूतैन्दुसोमेयेतिवाम् अवर्धन्नभवन्गणस्ते.....

10– ऋग्वेद, III 35.9

11– ऋग्वेद, 10, 9, 16

12– "An der Spitze der Koniglichen Familie Stehedieser als Konig, Zimmer, Aet-indisched P.165" व्हिट्ने का अनुवाद (जिल्द 1, पृ0 188)

13– माडर्न रिव्यू, 1913, पृ0 538

14– 5, 1, 2 पृ0 22

15– व्हिटने, अथर्ववेद, पृ0 251

16– यदि हम म्यूर और जिमर का अनुवाद–एक हजार लोगों पर 1000 लोगों का शासन–मान लें तो शासन का रूप लोकतांत्रिक होना चाहिए। 1000 रूढ़ संख्या जान पड़ती है।

17– पाणिनि की अष्टाध्यायी 3, 3, 42

18– 3, 3, 36

19– ज0वि0उ0ऋ सो, जिल्द 5 पृ0 27

20– ज0वि0उ0ऋ सो, जिल्द 5, पृ0 27

21– पाणिनि, अष्टाध्यायी, 513–16

22– तत्रैव, 412–13

23– तत्रैव, 6/2/24

24– डॉ0 भण्डाकर, डी0आर0, लेक्चर ऑन एन्श्येन्ट हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पृ0 142–46

25– डॉ0 मजमूदार, आर0सी0, कारपोरेट लाइफ इन एन्श्येन्ट इण्डिया, पृ0 121

26– डॉ0 जायसवाल, काशीप्रसाद, हिन्दू पालिटी, पृ0 31, 32, 49, 51

27– रीज डेविड्स, टी0डब्लू0, बुद्धिस्ट इण्डिया, पृ0 9

28– तत्रैव, पृ0 15

29– मज्झिम निकाय, 1/415–35

30– जायसवाल, के0पी0, पूर्वोक्त, पृ0 24

31– डा0 अल्तेकर, ए0एस0, पूर्वोक्त, पृ0 149

32– केचिद्देशा गणाधीनाः केविद्राजाधीनाः।

33— आचारांगसूत्र, 2/3/1/101 अरायेणि वागणरायणि वा जुवरायणि वादोरज्जणि वा बेरज्जणि वा विरूद्धरज्जणि वा।

शासन के गणतन्त्रात्मक रूप के अस्तित्व को प्रमाणित करने वाले अन्य वचनों के लिए विस्तार से द्रष्टव्य श्री रीज डेविड्स, श्री जायसवाल एवं प्रो0 डी0आर0 भण्डारकर।

34— परमात्माशरण, प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएं, पृ0 385

35— बुद्धिस्ट इण्डिया, पृ0 1, 2, 19 एवं आगे

36— माडर्न रिव्यू, 1993, पृ0 535 और आगे

37— जिल्द एक, पृ0 146 और आगे